बछड़ो में खीस पिलाने का महत्व

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ० प्र०)

खीस, स्तनधारी पशुओं के थन से ब्यॉत के बाद प्रारंभिक कुछ दिनों (3–5) तक श्रवित गाढ़ा द्रव्य है जो नवजात बछड़ों को रोग प्रतिरक्षा प्रदान करता है।

खीस के गुण

- खीस हल्का पीला व गाढ़ा दूध जैसा द्रव्य होता है जो पोशक तत्वों से भरपूर है। यह विटामिन, खनिज, प्रोटीन एवं उर्जा का अच्छा स्रोत है।
- खीस में सामान्य दुग्ध की तुलना में 3–5 गुना अधिक प्रोटीन्स (13–14 प्रतिशत), लगभग 2 गुना कुल ठोस पदार्थ (23–28 प्रतिशत) एवं 5–15 गुना विटामिन श्एश पाया जाता है।
- यह नवजात बछड़ों के लिए रोग प्रतिरक्षा का एक मात्र स्रोत है। इसमें इम्यूनोग्लोबुलिन्स (एंटीबॉडीज) पाये जाते हैं जो बछड़ों को प्रारंभिक जीवन काल में प्रतिरक्षा प्रदान करता है।
- खीस नवजात बछड़ों के पेट से मल को निश्कासन में सहायक होता है क्योंकि इसमें रेचक गुण होते हैं।

खीस पिलाने का समय

- पहली बार खीस को जन्म के आधे घंटे के अंदर ही पिलाएँ
- खीस की कुल आवश्यकता बछड़े के शारीरिक भार के 1/10 हिस्से की होती है।

- खीस दिन में दो से तीन बार बराबर विभाजित खुराक में दी जानी चाहिए।
- उदाहरण के लिए, यदि बछड़े का जन्म भार 30 कि.ग्रा. है तो खीस की मात्रा 3.0 कि.ग्रा. होगी जो सुबह–शाम 1.5 कि.ग्रा.–1.5 कि.ग्रा. की मात्रा में विभाजित की जानी चाहिए।
- खीस को 3–5 दिनों तक पिलाना चाहिए।

कृत्रिम खीस कैसे तैयार करें

यदि मॉ बछड़े को खीस प्रदान करने में सक्षम नही है तो कृत्रिम खीस भी बनाकर दिया जा सकता है। इसे बनाने के लिए 600 मि.ली. गुनगुना दूध, 300 मि.ली. पानी, एक अंडा, 3–5 मि.ली. अरंडी का तेल व 1–2 चम्मच खनिज मिश्रण इत्यादि सामग्रियों का इस्तेमाल किया जा सकता हैं।

कृत्रिम खीस आवश्यकतानुसार बनाकर यथाशीघ्र पिलाना चाहिए।

अच्छी गुणवत्ता वाला खीस कैसे तैयार करें

- अच्छी गुणवत्ता वाला खीस प्राप्त करने के लिए गाय के थन को दोहन से पूर्व व बाद में पानी से धोकर सूखे व मुलायम कपड़े से पोंछना चाहिए।
- बाड़े का वातावरण स्वच्छ, सूखा एवं आरामदायक होना चाहिए।
- दूसरे या उसके बाद की ब्यात वाली गायों की खीस प्रथम ब्यात वाली गायों की तुलना में ज्यादा गुणकारी होता है।

खीस पिलाने के तरीके

- खीस को थन से, कृत्रिम निप्पल–बोतल व बर्तन या बाल्टी द्वारा पिलाया जा सकता है।
- वैज्ञानिक पालन पद्धति में खीस को कृत्रिम निप्पल–बोतल या बाल्टी द्वारा खीस पिलाने की सलाह दी जाती है।
- खीस पिलाते समय कमजोर बछड़े को सहायता प्रदान करें।
- यदि गाय अपने बछड़े को थन से खीस नही पीने दे रही है या बछड़ा कमजोरी के कारण खीस नही पी रहा है तो पेट नलिका द्वारा भी खीस दिया जा सकता है।
- अच्छी गुणवत्ता वाले खीस को फ्रीज में 7 दिन तक तथा डीप फ्रीज में लगभग एक साल तक रखा जा सकता है। डीप फ्रीज से निकाल कर पिलाने से पूर्व खीस को ठंडे पानी में कुछ देर तक रखना चाहिए। गर्म जल का प्रयोग खीस की गुणवत्ता को कम करता है।

थन द्वारा खीस पान

निप्पल बोतल द्वार खीस पान

पेल/बाल्टी द्वारा खीस पान

संरक्षण : **डा. राज कुमार सिंह**
निदेशक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ. प्र.)

मार्गदर्शन : **डा. महेश चन्द्र संयुक्त**
निदेशक, प्रसार शिक्षा (कार्यकारी), भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ. प्र.)

लेखक : **डा. पी.के. भारती**
वैज्ञानिक
डा. जी.के. गौड
प्रधान वैज्ञानिक
डा. मुकेश सिंह
प्रधान वैज्ञानिक
डा. वी.के. गुप्ता
प्रधान वैज्ञानिक
डा. रूपसी तिवारी
प्रधान वैज्ञानिक
डा. त्रिवेणी दत्त
प्रधान वैज्ञानिक

संपादन : **डा. रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर–243122 (उ. प्र.)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क
आई.वी.आर.आई. हेल्पलाइन : 0581-2311111
किसान कॉलसेन्टर : 1800-180-1551
आई.वी.आर.आई. बेवसाइट : www.ivri.nic.in